B. Com. Part I

B.O. (Subsidiary)

classmate Date ____ Page 1

Q. एकाकी व्यापार से आप क्या समझते हैं ? इसकी प्रधान विशेषताओं का वर्णन कीजिये ? (What do you understand by Sole trading? Describe its main features.)

Ans:- एकाकी व्यापार व्यावसायिक संगठन का वह स्वरूप है जिसका स्वामी केवल एक ही व्यक्ति होता है जोखिम अकेला ही वह करता है. स्वयं ही आवश्यक पूँजी उपलब्ध करता है, एवं लाभ हानि का स्वयं ही अधिकारी होता है तथा व्यापार के समस्त प्रशासनिक उत्तरदायित्वों को स्वयं ही पूरा करता है इसको ही एकाकी व्यापारी कहा जाता है।

विभिन्न विद्वानों ने एकाकी व्यापार की परिभाषा इस प्रकार दी है:-

(1) L.H. Haney के अनुसार:- एकाकी व्यापार व्यवसाय का वह स्वरूप है, जिसका प्रमुख एक ही व्यक्ति होता है जो उसके समस्त कार्यों के लिए उत्तरदायी होता है, उसकी क्रियाओं का संचालन करता है एवं लाभ-हानि का सम्पूर्ण भार स्वयं ही उठाता है।"

(2) Kimball & Kimball के अनुसार:- एकाकी व्यापार ~~[illegible]~~ ~~[illegible]~~ को अपने राष्ट्र के सामान्य नियमों तथा अपने व्यवसाय से सम्बन्धित विशेष नियमों के अन्तर्गत अपने व्यावसायिक क्षेत्र में सर्वोच्च अधिकार होता है।

(3) ~~[illegible]~~ Peterson & Plowman के अनुसार:- "एकाकी स्वामित्व एक ऐसा व्यवसाय है जिसका स्वामित्व एवं प्रबन्ध एक ही व्यक्ति के पास होता है। यही एकाकी उपक्रम की हानियों अथवा असफलताओं की जोखिम उठाता है तथा सफल संचालन के समस्त लाभों को प्राप्त करता है।

एकाकी व्यापार के विशेषताएँ

एकाकी व्यापार के निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं:-

(1) प्राचीनतम तथा सरलतम प्रारूप:- एकाकी व्यापार की सर्व प्रथम विशेषता यह है कि यह व्यावसायिक संगठन का प्राचीनतम तथा सरलतम प्रारूप है। किम्बाल एवं किम्बाल के अनुसार "सभी व्यावसायिक संगठनों में से एकाकी व्यापार प्राचीनतम, सरलतम तथा कई बातों में पूर्णतः प्राकृतिक है।

(2) एकाकी स्वामित्व:- एकाकी व्यापार का स्वामित्व एक ही व्यक्ति हाथ में होता है उसके समस्त अंशों के लिए वह स्वयं उत्तरदा[यी]

होता है। श्री गर्स्टनबर्ग के शब्दों में, "एकाकी व्यापारी सबका स्वामी होता है और समस्त जोखिम उठाता है"

(3) असीमित उत्तरदायित्व :- इसमें स्वामित्व और जोखिम सहगामी होते हैं व्यापार में होने वाली समस्त क्रियाओं के लिए वह व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी होता है एवं उसके व्यापारिक ऋणों का भुगतान केवल व्यापारिक सम्पत्ति से ही नहीं बल्कि अपनी निजी सम्पत्ति से भी करना पड़ता है।

(4) वैधानिक औपचारिकताओं से मुक्ति :- एकाकी व्यापार के आरम्भ करने में किसी वैधानिक कार्यवाही, जैसे - पंजीयन आदि की आवश्यकता नहीं होती। कोई भी व्यक्ति इच्छानुसार किसी भी वैधानिक व्यवसाय को आरम्भ कर सकता है।

(5) पूंजी पर एकाधिपत्य :- एकाकी व्यापार में लगाई जाने वाली समस्त पूंजी का प्रबन्ध वह स्वयं ही करता है। इसके लिए वह अपनी समस्त पूंजी तो लगाता ही है, अपितु आवश्यकता होने पर वह दूसरों से उचित ब्याज पर ऋण भी प्राप्त कर सकता है।

(6) व्यवसाय तथा उसके स्वामित्व में कोई अन्तर नहीं :- एकाकी व्यापार का एक प्रमुख लक्षण यह भी है कि इसमें व्यवसाय एवं व्यवसाय के स्वामित्व में कोई अन्तर नहीं है। व्यवसाय का अस्तित्व उसके अस्तित्व के साथ जुड़ा है, उससे अलग नहीं। यदि व्यवसाय में लाभ या हानि पहुंचती है तो उसके स्वामी को भी लाभ एवं हानि पहुंचती है।

(7) व्यवसाय के चुनाव की स्वतंत्रता :- एकाकी व्यापार में व्यापारी अपनी इच्छानुसार किसी भी व्यापार को चयन एवं प्रारम्भ करने में पूर्ण रूप से स्वतंत्र है। उसको किसी से अनुमति एवं सलाह लेने की आवश्यकता नहीं होती है।

(8) एकाकी नियंत्रण एवं प्रबन्ध :- एकाकी व्यापारिक संस्था का स्वामी ही साधारणतया व्यापार का संगठनकर्ता, नियंत्रणकर्ता तथा प्रबन्धकर्ता भी होता है। उसका प्रबन्धक भी होता है। उसका प्रबन्ध किसी निर्वाचित एवं मनोनित समिति द्वारा न होकर अन्तिम रूप से उसके अधीन ही रहता है।

(9) कार्यक्षेत्र की सीमित-सीमा :- सीमित कार्य-क्षमता, असीमित उत्तरदायित्व तथा सीमित पूंजी के कारण एकाकी व्यापार का कार्य क्षेत्र प्रायः सीमित ही रहता है। किन्तु यह हर स्थिति में आवश्यक नहीं है,

(10) प्रारम्भ तथा अन्त करने में सुविधा :- एकाकी व्यापार ही संसार में ऐसी व्यावसायिक संस्था है जिसको जितनी शीघ्रता से प्रारम्भ किया जा सकता है उतनी ही शीघ्रता से समाप्त किया जा सकता है।

(11) लाभों का एकाधिकार :- एकाधिकारी व्यापार में एकाकी व्यापारी का लाभों पर एकाधिकार होता है। इसी प्रकार हानि के प्रति भी वह अकेला ही उत्तरदायी होता है।

(12) विशिष्ट व्यवसायों के लिए उपयुक्तता :- जिन व्यावसायिक उपक्रमों में व्यक्तिगत योग्यता, सेवा तथा सतर्कता की अत्यधिक आवश्यकता है उनमें एकाकी व्यापारी सदैव जीवित रहेगा, जैसे :- पेशेवर कार्य - अध्यापक, डॉक्टर, परामर्शदाता, सिलाई का कार्य, आदि।

— समाप्त —